खेलों में वैकल्पिक कॅरिअर

– वी. कुमार

खेलों के प्रति जोश तथा उमंग रखने वाले तथा खेलों में कॅरिअर बनाने के इच्छुक व्यक्तियों के लिए केवल खिलाड़ी के रूप में ही कॅरिअर के अवसर उपलब्ध नहीं है.

रोम के प्राचीन दिनों में, जब ओलम्पिक्स में खेल एक शानदार तमाशा हुआ करते थे, तब से लेकर आज के आधुनिक ओलम्पिक खेल के अति प्रबंधित समारोहों ने मापदण्ड तथा प्रबंधन दोनों ही स्तर पर काफी प्रगति की है. बीजिंग ओलम्पिक्स इसका एक उदाहरण है. बीजिंग ओलम्पिक्स की आयोजन–समिति ने विभिन्न केन्द्रों पर कार्य करने के लिए लगभग एक लाख स्वयं सेवियों की भर्ती करने के लिए एक विज्ञापन जारी किया था.

यह संख्या केवल स्वयं सेवियों की है, हम इस समारोह के लिए अपेक्षित प्रशासकों, प्रबंधकों तथा कार्यकर्ताओं, प्रशिक्षकों, विभिन्न महाद्वीपों से जुड़े समर्थक स्टाफ, रेफरी, अम्पायरों, चिकित्सा देने वाले कर्मचारियों, समारोह का प्रचार–प्रसार करने वाले पत्रकारों, जन–सम्पर्क प्रबंधकों तथा अन्य मीडिया स्टॉफ की तो बात ही नहीं कर रहे हैं.

अस्थायी स्वयं सेवियों से भिन्न ये पूर्णकालिक व्यवसायी अपने संबंधित क्षेत्रों (ट्रेडों) से जुड़े जटिल कार्य देखते हैं.

ओलम्पिक्स की व्यापक तैयारी खेल आवश्यकताओं का एक छोटा सा उदाहरण है, और जैसा कि पहले कहा गया है, तैयारी का यह अवसर चार वर्षों में एक बार नहीं आता, बल्कि इसके लिए वर्षों की तैयारी और पूरा ध्यान दिए जाने की आवश्यकता होती है. एक व्यवसाय के रूप में खेल के विभिन्न पहलुओं को समझने का एक और उदाहरण है. हाल ही में जब भारतीय क्रिकेट टीम आस्ट्रेलिया के दौरे पर गई थी, तो खिलाड़ियों के अलावा खेल–व्यवसायी भी बड़ी संख्या में इस दौरे पर गए थे. टीम के साथ मुख्य कोच (डंकन फ्लेचर), प्रबंधक, बोलिंग कोच, फिजियो–थेरापिस्ट, शारीरिक प्रशिक्षक, मेंटल कंडीशनिंग कोच (दूसरे शब्दों में खेल मनोवैज्ञानिक), मैसॉर, वीडियो विश्लेषक (खिलाड़ियों की वीडियो फुटेज रिकॉर्ड करने और उनकी समस्याओं के क्षेत्रों का विश्लेषण करने आदि के लिए), सम्पर्क अधिकारी, मीडिया प्रबंधक तथा टीम के चयन में सहायता करने के लिए एक चयनकर्ता भी दौरे पर गए थे. इनके साथ ही भारतीय मीडिया कर्मी भी बड़ी संख्या में टीम के साथ गए थे, जिनमें संवाददाता, फोटोग्राफर एवं वीडियो पत्रकार शामिल थे.
नीचे हम खेलों में उपलब्ध वैकल्पिक कॅरिअर के विवरण दे रहे हैं.

कोचिंग / ट्रेनिंग

कोचिंग एक अत्यधिक सम्मानित एवं अतिआवश्यक व्यवसाय है. राष्ट्रीय तथा अंतर्राष्ट्रीय जैसे उच्च स्तरों पर कोचिंग के लिए सामान्यतः अत्यधिक अनुभव की आवश्यकता होती है. ऐसे कोचों को स्वयं खिलाड़ियों के रूप में लंबा एवं व्यापक अनुभव होता है. इस तरह, उच्च स्तर पर कोचिंग करना सेवा–निवृत्त खिलाड़ियों के लिए एक व्यावहारिक विकल्प है. यह विकल्प किसी भी उच्च स्तर के

एथलीट को उसका कॅरिअर आगे बढ़ाने में भी सहायता करता है क्योंकि खेल से जुड़े किसी भी व्यक्ति का खिलाड़ी के रूप में जीवन सीमित होता है.

यहां यह ध्यान देना महत्वपूर्ण है कि नए विश्व चैंपियन देने के लिए किसी के लिए यह आवश्यक नहीं है कि वह स्वयं भी विश्व –रिकॉर्ड धारी हो. खेल की गहरी समझ, उसकी उपयुक्तता तथा जन प्रबंधन सामान्यतः एक अच्छे कोच के गुण होते हैं.

तथापि कोचिंग भी केवल उच्च स्तर के व्यवसायियों तक ही सीमित नहीं है और इस तथ्य से इंकार नहीं किया जा सकता कि खेलों के विकास तथा क्षमता विकास के साथ ही ट्रेनर के रूप में रोज़गार के व्यापक अवसर उपलब्ध हैं.

शैक्षिक संस्थाएं, स्कूल तथा कॉलेज शारीरिक प्रशिक्षकों को रोज़गार पर रखते हैं, जिन्हें सामान्यतः पी.जी.टी. तथा टी.जी.टी. कहा जाता है. आज–कल अभिभावक उन स्कूलों को वरीयता देते हैं जिन स्कूलों में नियमित खेलों के अतिरिक्त योग, तैराकी, घुड़सवारी आदि जैसी अनेक शारीरिक गतिविधियां होती हैं. उन सभी गतिविधियों के लिए प्रशिक्षित कोचों एवं ट्रेनर्स की आवश्यकता होती है.

इनके अतिरिक्त, फिटनेस केन्द्रों एवं संस्थानों द्वारा ट्रेनर बड़ी संख्या में रखे जाते हैं. निजी आधार पर कार्य करने के लिए कुशल ट्रेनर्स की मांग भी बढ़ती जा रही है.

अम्पायरिंग/रैफरिंग

खेल नियमों से बंधे होते हैं और खेल सही नियमों एवं भावना के साथ खेले जा रहे हैं यह देखने के लिए एक जज की आवश्यकता होती है. रैफरी में ठोस निर्णय क्षमता होने के अतिरिक्त, उसे शारीरिक तथा मानसिक रूप से भी स्वस्थ होना चाहिए. उसे खेल में दक्ष होना चाहिए और उसे नियमों के प्रति कठोर होने के साथ–साथ शांतचित्त एवं धैर्यवान भी होना चाहिए. प्रायः कहा जाता है कि अपांयरिंग करना एक बेकार कार्य है, क्योंकि अपांयर या रैफरी होने का निर्णय उनके सही फैसलों से नहीं, बल्कि उनकी गलतियों से किया जाता है. प्रायः एक गलती या भूल खेल में किए गए पूरे अच्छे काम पर पानी फेर देती है. यह स्वीकार करना महत्वपूर्ण है कि कोई भी गलती केवल मानवीय भूल है और कोई भी व्यक्ति पूर्णतः दक्ष नहीं होता. किंतु इन भारी प्रत्याशाओं के बीच यदि कोई व्यक्ति दबाव में भी अच्छा प्रदर्शन करता है और चुनौतियों को स्वीकार करता है तो खेल निर्णायक के रूप में कुछ कॅरिअर पुरस्करणीय हो सकते हैं.

यदि किसी व्यक्ति ने खेला हो तो यह उसके लिए सहायक हो सकता है, लेकिन एक श्रेष्ठ अम्पायर बनने के लिए यह अनिवार्य नहीं है. कोचों के लिए अनेक ऐसी प्रशिक्षण संस्थाएं हैं जो सामान्यतः संबंधित खेल फेडरेशनों द्वारा चलाई जाती हैं. कोचों को सामान्यतः उनके कौशल एवं अनुभव के आधार पर 1, 2, 3, एवं 4 ग्रेड स्तर पर रखा जाता है. राज्य एवं राष्ट्रीय खेल संगठन अम्पायरों तथा रैफरियों को कार्यों पर रखते हैं. वे फ्रीलांसर के रूप में भी कार्य करते हैं तथा पूर्णकालिक रोज़गार में होने के साथ अपने बचे हुए समय में रैफरी के रूप में कार्य करते हैं.

खेल – औषधि

यह एक ऐसा क्षेत्र है जहां प्रशिक्षित कार्मिकों की भारी कमी रही है.

शारीरिक क्षमता तथा स्वस्थता को अधिकतम बनाए रखने एवं उस पर निगरानी रखने के लिए डाक्टरों, फिजियोथेरापिस्ट्स, डाइटिशियन्स एवं पोषण–विज्ञानियों की अत्यधिक आवश्यकता होती है. खेल के दौरान भी छोटी चोटों, मोचों आदि के उपचार के लिए फिजियोथेरापिस्ट की आवश्यकता पड़ती है. एथलीटों को प्रतिबंधित पदार्थों की सूची की जानकारी देने और गैर–कानूनी औषधियों के सेवन से बचने का प्रशिक्षण देने के लिए डॉक्टरों की भी आवश्यकता होती है. कभी–कभी सामान्य दवाइयां भी खून के नमूनों में बाधा डाल देती हैं, इसलिए खिलाड़ियों को डब्ल्यू.ए.डी.ए. दिशा–निर्देशों के अनुसार यह जानकारी अच्छी तरह से होनी चाहिए कि उन्हें कौन सी दवा लेनी है और किस दवा के सेवन से बचना है. एक खेल औषधि विशेषज्ञ की यह और इससे भी अधिक भूमिका होती है.

पुनर्स्थापन केन्द्र तथा स्वास्थ्य क्लब आदि भी खेल औषधि विशेषज्ञों को रोज़गार पर रखते हैं.

खेल मीडिया

खेल में मीडिया का बहुमुखी विकास हुआ है तथा इसकी भूमिका एवं कार्यों का भी समय के साथ–साथ विकास हुआ है.

पहले कुछ रिपोर्टर एवं एक या दो स्टिल फोटोग्राफर ही किसी खेल की रिपोर्ट देने के लिए पर्याप्त हुआ करते थे, किंतु आज इनकी संख्या सैकड़ों में पहुंच चुकी है. मीडिया भारत में तीव्रगति से विकासशील उद्योग है और अनेक समाचार–पत्रों तथा न्यूज चैनलों के व्यापक विस्तार से प्रशिक्षित मीडिया कर्मियों की मांग में वृद्धि हुई है.

खेल–पत्रकारिता

आजकल अधिकांश समाचारपत्रों एवं टीवी चैनलों की एक मजबूत खेल कवरेज टीम होती है. एक खेल डैस्क में समान्यतः 10 व्यक्ति होते हैं, जिनमें खेल सम्पादक, विभिन्न खेलों में पत्रकार, उप–सम्पादक, ऐंकर, पेज डिजाइनर आदि शामिल होते हैं.

खेल पत्रकारिता में प्रवेश सामान्यतः एक प्रशिक्षणार्थी रिपोर्टर या प्रशिक्षणार्थी उप–सम्पादक के रूप में मिलता है और वह यहीं से उन्नति करता है. कवरेज के लिए पत्रकारों को अलग–अलग खेल, जैसे क्रिकेट, फुटबॉल, टेनिस, एथलेटिक्स, ओलम्पिक खेल, हाकी आदि दिए जाते हैं. कभी–कभी उन्हें उनके निर्धारित खेल से हटा कर अन्य खेलों की कवरेज सौंपी जाती है और प्रत्येक पत्रकार को क्रम में सभी खेलों की कवरेज दी जाती है. किसी भी खेल पत्रकार को खेलों की जटिलताओं का सामना करने में दक्ष होना चाहिए और अपने विशेष खेल के खिलाड़ियों तथा प्रशासकों से अच्छे सम्पर्क में होना चाहिए.

खेल पत्रकारिता को कॅरिअर के रूप में अपनाने की प्रवृत्ति बढ़ रही है. क्रिकेट की कवरेज करने वाले एक कर्मी का कथन संक्षेप में निम्नानुसार हैः ''क्रिकेट मैच देखने के लिए व्यक्ति भुगतान करते हैं और उन्हें देखने (कवरेज करने) के लिए मुझे भुगतान किया जाता है.''

रिपोर्ट लेखन के अतिरिक्त खेल कमेंटेटर बनने का भी विकल्प है. इस कार्य के लिए अच्छे वेतन का भुगतान किया जाता है, लेकिन लाइव कमेंटेटर की मांग काफी कम है.

खेल फोटो पत्रकार

किसी भी खेल–कहानी के लिए एक्शन फोटो महत्वपूर्ण होते हैं और उत्कृष्ट फोटोग्राफरों को मीडियां संस्थाओं में उनके कार्यों के लिए सम्मानित किया जाता है. वे चित्रों के माध्यम से कहानी कहने का प्रयास करते हैं और अपनी श्रेष्ठ रचनात्मक शक्ति के होने के अतिरिक्त उन्हें सही समय पर सही स्थान पर होने की भी आवश्यकता होती है.

दूरदर्शन एवं खेल–चैनलों के आगमन के साथ ही खेल–कैमरा कर्मियों की मांग व्यापक हो गई है. वे समाचार बुलेटिनों और कार्यक्रमों के लिए कवरेज करते हैं और उन्हें आंखों देखा हाल भी कवर करना होता है. आंखों देखा हाल प्रस्तुत करना एक जिम्मेदारी भरा कार्य है और इस कार्य के लिए व्यापक अनुभव एवं विशेषज्ञता की आवश्यकता होती है.

खेल जन–सम्पर्क व्यवसायी

अनेक जन–सम्पर्क एजेंसियां ऐसे खेलों से जुड़ी हुई हैं जिनमें खेलों की उमंग रखने वाले जन–सम्पर्क व्यवसायियों की आवश्यकता होती है. खेल फेडरेशनों को जन–सम्पर्क प्रबंधकों की, इवेंट आयोजकों को जन–सम्पर्क प्रबंधकों की और यहां तक कि खिलाड़ियों को भी जन सम्पर्क विशेषज्ञों की आवश्यकता होती है ताकि मीडिया के क्षेत्र में वे उनका मार्ग दर्शन कर सकें. आई.पी. एल. एवं एफ–१ जैसे खेलों ने उन जन–सम्पर्क प्रबंधकों की बड़ी संख्या के लिए दरवाजे खोल दिए हैं जो केवल खेलों के लिए कार्य करते हैं.

खेल प्रशासक एवं प्रबंधक

खेल फेडरेशनों तथा संगठनों के रखरखाव तथा संचालन के लिए योग्य एवं सक्षम खेल प्रशासकों की आवश्यकता होती है. चूंकि खेल जगत निरंतर व्यावसायिक होता जा रहा है इसलिए केवल प्रशिक्षित प्रबंधकों एवं प्रशासकों की मांग बढ़नी भी निश्चित है. सरकारी तथा निजी दोनों क्षेत्रों में इनके लिए अवसर अब भी उपलब्ध हैं.

यह खेलों में उपलब्ध कॅरिअर की विस्तृत सूची नहीं है. यह तो वर्तमान व्यावसायिक प्रवृतियों की एक झलक मात्र है. इसके अतिरिक्त यदि कोई रचनात्मक हो तो उद्यम की प्रवृत्ति वाले उस व्यक्ति के लिए खेल–पर्यटन, शिक्षा तथा खेल उपकरण विनिर्माण जैसे अन्य अवसर भी विद्यमान हैं.

(लेखक एक खेल–पत्रकार होने के साथ–साथ ओलम्पिक्स एवं क्रिकेट विश्व–कप सहित सुप्रसिद्ध खेलों का रिपोर्टिंग अनुभव भी रखते हैं.) ई–मेल : vidanshu@ hotmail.com